before the House rose for lunch. Shri Bhupesh Gupta made a speech and it appeared as if the matter is between the Opposition and the Government. It is not a matter between the Opposition and the Government. It was before the Business Advisory Committee which advises the Chairman and a decision is taken and announced. It is certainly not the intention of the Government to trample over the right of Private Members or to deprive them of this opportunity. Now he has made this suggestion; certainly Government will consider it and will co-operate in find ing time and accommodating the Private Members.

SHRI BHUPESH GUPTA: I am not coming in the way of the Government. Finish your Government business. It can come on any day.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA): Any day at 5 O'clock.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, as you know, this Bill relates to article 291 of the Constitution.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL (Gujarat): I have no objection to any arrangement that is made in the interest of the smooth running of the House. But may I suggest that Mr. Bhupesh Gupta should attend the meetings of the Business Advisory Committee and come and help us in having the business that suits him? He wants to have his own way in the matter of business in this House. To that also I am not objecting. But why does he not co-operate by attending the meetings of the Business Advisory Committee?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA): That is good advice.

SHRI BHUPESH GUPTA: Since my esteemed friend and a senior Member of this House, Shri Dahyabhai Patel, has made this suggestion, I am ready for giving co-operation but, as you know, I am not a Member of the Business Advisory Committee.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA): As a leader of your Group you are.

SHRI BHUPESH GUPTA: Nor was I invited yesterday. But Mr. Bhadram represented our Party.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA): Now let us go back to the Railway Budget.

THE BUDGET (RAILWAYS), 1968-69—*continued.*

श्रीमती पुष्पाबेन जनार्दनराय महेता (गुजरात) : उपसभाध्यक्ष महोदय, रेलवे बजट की चर्चा चल रही है, मैं यह चर्चा शुरू करने के पहले रेलवे मिनिस्टर की चिन्ता और मुसीबत के प्रश्न पर सहमत हूं। इस साल में रेलवे की मिलकियत को जो नुकसान हुआ है और जो व्यवहार बन्द रहा और इसलिये जो परेशानी सर्व कक्षा के स्टाफ की हुई यह हमारे राष्ट्र के लिये दुखद परिस्थिति है। रेलवे के कर्मचारियों ने तूफान, डमला और आग में जो शान्ति और शक्ति दिखलाई है, इसलिये मैं उनको धन्यवाद देती हूं। मुझे समझ में नहीं आता कि कोई राष्ट्रीय प्रश्न का रोष राष्ट्रीय सम्पत्ति नाश कर के—नुकसान करके क्यों दिखाया जाय। यह सम्पत्ति किसी पक्ष या कोई व्यक्ति की नहीं है, किन्तु यह राष्ट्र की है हमारी है, हमारी मेहनत और आमदनी से दिये टैक्स से यह सम्पत्ति बनी हुई है। मैं सब पक्षों से यहां प्रार्थना करना चाहती हूं कि अपना क्रोध, अपना रोष और अपना मिजाज, यह राष्ट्रीय मिलकियत जो सब की है, एक एक व्यक्ति जो टैक्स रहा है उससे बनी हुई है, इस पर न उतारें। जनता को यह समझना पड़ेगा कि यह नुकसान

[श्रीमती पुष्पाबेन जन दैनराय मेहता]

हमें ही देना पड़ेगा, टैक्स बढ़ेंगे और आखिर में यह नुकसान का बोझा हमारे ऊपर आयेगा।

रेलवे बुकिंग की मुसीबत से थक कर और अधिक सुविधा मिलती है इसीलिये, रोड गुड्स और पैसेंजर ट्रैफिक बढ़ रहा है। आज लोग बस ज्यादा पसन्द करते हैं क्योंकि शार्ट डिस्टेंस पड़ता है और समय घट जाता है। इसके अलावा स्टेट ट्रांसपोर्ट ने भी अपना काम बहुत अच्छी तरह से किया है। इसलिये भी आज हमारा पैसेंजर और गुड्स ट्रैफिक कम हो रहा है। मैं आपसे प्रार्थना करना चाहती हूं कि अगर एफिशिएंसी नहीं बढ़ाएंगे तो रेलवे में नुकसान ही होता रहेगा।

रेलवे का एडमिनिस्ट्रेशन चलाते हुए जो घाटा आता है उसको पूरा करने के लिये नया बोझा हमारे पर आ रहा है। महंगाई, वेतन का बढ़ाना और अन्य जिम्मेदारी मिनिस्ट्री पर है, किन्तु जैसे किराया बढ़ाया, गुड्स पर अधिक किराया लगाया, वैसा इकोनामिक ड्राइव भी एडमिनिस्ट्रेशन में हो सकता है।

मैं यह कहना चाहती हूं कि इकोनोमिक ड्राइव में रेलवे विभाग ने ट्रेनों में बत्तियाँ कम कर दीं, नाइट लैम्प्स निकाल दिये, प्रकाश भी कम आता है और फर्स्ट क्लास में सिर्फ दो बत्तियाँ रखी। मैं इस ड्राइव का अर्थ नहीं पा सकी। नाइट लैम्प्स नहीं होने के कारण कितनी मुसीबत प्रवासियों को है यह जानना चाहिये और सायंकाल से सोने तक लाँग जर्नी में क्या करना है, समय काटना बहुत मुश्किल है जो प्रवासी का मूलभूत अधिकार है उससे उनको वंचित करना यह इकोनामिक ड्राइव है।

लाइट के बाद फिनाइयल और डी० डी० टी० भी बहुत कम कर दिया है। आरोग्य और सफाई का प्रश्न हम भूल गये हैं।

सब से ताज्जुब की बात यह है कि वेस्टर्न रेलवे के भावनगर डिविजन में अमुक स्टेशन के स्टाफ को गरम कपड़े से वंचित रखा गया था, परन्तु बहुत मेहनत के बाद वह दिया गया और उसके लिये धन्यवाद देती हूं। किन्तु पीछे से क्या हुआ कि एक हाथ से कपड़ा दिया और दूसरे हाथ से छीन लिया। जो घाटा आया वह गैंगमैन पर आया। जो कंबल उनको दिया था वह कम्बल ले लिया। हमारे यहाँ सब से ज्यादा ठंड इस साल रही और उस ठंडक में उनको कम्बल नहीं मिला। यह छोटी बात है किन्तु हम देखते हैं कि इससे बड़ा दुख वहाँ के स्टाफ को हुआ है। क्या कारण है—यह अधिकारी जानें। इतनी सख्त ठंड में गैंगमैन को कोई प्रोटेक्शन नहीं मिला। मैं जानना चाहती हूं कि क्या यह इकोनामिक ड्राइव है। सचमुच इकोनामिक ड्राइव आफीसर्स को जो लग्जूरियस एमेनिटीज दी जाती है उसमें करना चाहिए। बड़े बड़े मकान, उनका माली, पानी और पियन का खर्च कम करना चाहिए। दूसरे सेलून में बार-बार अपनी फैमिली के साथ जो आफीसर्स दौरा करते हैं वह भी कम करना चाहिए। हरएक डिविजन से एक मेगजीन रियल आर्ट पेपर पर निकलती है, वह सचमुच आफीसर्स की फोटोज और खुशामद का प्रदर्शन है। उसमें सारे कर्मचारियों के लिए कुछ होता नहीं। उसे बन्द कर देना चाहिए। ऐसी बहुत सी चीजें है। ये खर्चे कितने बड़े हैं आप जानें, हम नहीं जान सकते। मेरा एक सुझाव है कि ये जो फिजूल चीजें हैं इनको और एक्स्ट्रावेगेन्स को कम करने के लिए एक कमीशन बनाया जाय।

एक दूसरा प्रश्न यह है कि गत साल के बजट के समय जो कहा गया था उस पर क्या फैसला हुआ, वह मालूम नहीं है। मेरे दिल में आता है कि यह न्याय ऐसा है कि तुम बकती हो, हम सुनते हैं। यह

दूर होना चाहिए। हमारी जो दिक्कतें हैं उन्हें शीघ्रता से दूर करना चाहिए।

गार्ड्स की तनख्वाह, केटरिंग वगैरह पर बहुत से सुझाव आए है। यह प्रश्न मैं छोड़ देना चाहती हूं पर इस कथन मे मेरी सम्मति है कि हमारी यह शिकायत माननीय मंत्री जी सुने और उस पर तत्काल अमल करे।

हमारे गुजरात मे एक बड़ा प्रश्न नेरो गेज रेलवे का है। मैं कहना चाहती हूं कि हमारे गुजरात मे, सौराष्ट्र में रेलवे का बड़ा इतिहास है। वहां जो स्टेट्स थी उनके रूलर्स ने प्रजा को सुविधा देने के लिए नेरो गेज रेलवे रखी थी। आज आप उसको निकाल देना चाहते हैं। इसमें जो सुविधा मिलती है वह कम है और उनके जो इंजन है वह जब से रेलवे बनी है तब से रिप्लेस नहीं हुए हैं, स्पीड का कोई ठिकाना नहीं है। लोग पसन्द नही करते है लेकिन जाने की जरूरत होती है तो जाना पड़ता है। गुजरात राज्य मे ऐसी 15 लाइने है। उन पर बहुत से मुसाफिर सफर करते है। अगर यह सुविधा ले ली जाती है तो बड़ी दिक्कत पैदा हो जायगी। मेरी आपसे जोर से प्रार्थना है और डिमान्ड है कि नेरो गेज रेलवे चालू रखी जाय और स्टेट के पास पैसा आ जाय तो इसे मीटर गेज रेलवे कर दे तो हमारी मुश्किल कम हो जायगी। इसको निकालने की जरूरत हमें नही मालूम होती।

अब मैं अपनी पुरानी मांग पेश करती हूं। गत वर्ष वेरावल के प्लेटफार्म के बारे मे मैने कहा था। वहा पर सोमनाथ जाने के लिए बहुत यात्री आते हैं, जंगल मे सिंह देखने के लिए भी लोग जाते है। वहां के स्टेशन को एक्स्टेंड करने की प्रार्थना मैने की थी लेकिन उसको नही किया है। यह हमारी तकलीफ है। रेलवे एडमिनिस्ट्रेशन ने अभी तक कुछ नही किया है। इसके लिए एक व्यक्ति को नियुक्त कर दिया जाय। वह देखे कि क्या करना है। मुझे ताज्जुब है एक साल हो गया। हमारा सारा ट्रेफिक, ऊना तक का ट्रेफिक है वह ओपन रेलवे लाइन से आता है, ओपन रेलवे क्रासिंग है। मैं कहना चाहती हूं कि हमारा जो एक बन्द दरवाजा है वह दिन मे 24 घंटों मे 42 बार बन्द होता है। आप कल्पना कीजिए कितनी बड़ी दिक्कत है। यह स्टेट और रेलवे दोनों को मिल कर करना है। इधर से आदमी हमारा कागज फेंक दें तो हमारा काम कभी होने वाला नही है। इसके लिए भी कोई कमेटी नियुक्त करे, कोई खास अफसर को नियुक्त करे तो ठीक है।

जो यात्री धार्मिक श्रद्धा से राष्ट्र की यात्रा करते हैं उनको कोई सुविधा नहीं मिलती है। उनके साथ रेलवे कर्मचारियों का बर्ताव दुखद है। कल श्री पालीवाल जी ने बताया कि आगरा की बोगी में चोरी हुई। ऐसी बहुत सी चीजें मैं भी जानती हूं। यात्री बोगी को दूर-दूर फेंक देते है, सुविधा नही मिलती है, लाइट और पानी का भी बन्दोबस्त नही होता है। जो रेलवे स्टाफ को खुश करे उन्हे सुविधा प्राप्त होती है, नही तो नही। मैं जानना चाहती हूं कि क्या हर जगह, एर एक स्टाप पर यह सुविधा टेक्स, खुश करने का टेक्स यात्रियों से लेना ठीक है? कल कर्मचारियों के बारे में हमारे याजी भाई और सब ने बहुत बताया। उनको सब कुछ दे दो, हमें चिन्ता नहीं है, जो उनका अधिकार है उनको मिले, मगर मैं यह जानना चाहती हूं कि हमारे यहां रिश्वत क्यों है। रेलवे मे बराबर रिश्वत चलती है। जितनी दो-चार यूनियन हैं जो उनकी तनख्वाह बढ़ाने की बात करती हैं, उसी के साथ-साथ कर्मचारी रिश्वत न लें, यह जो उनकी वृति हो गई है उसके लिए भी उन्हे कुछ करना चाहिए। अनपढ़ गरीब पैसिन्जर्स को कोई फायदा नही मिलता है, उनसे बराबर पैसा लेते हैं और उनको

[श्रीमती पुष्पाबेन जनार्दनराय महेता]

बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिए मैं यूनियनों से प्रार्थना करती हूं, कर्मचारियों को कर्तव्यपालन का पाठ दें। 6 महीने पहले एक बोगी आई थी सेकिन्ड क्लास थी, उसके पैंसिजर्स को मिलने के लिए गई तो मालूम हुआ कि 18 वें फाटक पर रखा था। उनकी सब बात सुनी तो मालूम हुआ कि आगरा, इलाहाबाद, कलकत्ता सब जगह उनको बड़ी परेशानी हुई। इसलिए मैं चाहती हूं कि आप इसके बारे में कुछ ध्यान दें।

सबसे अधिक यह कहना चाहती हूं कि थर्ड क्लास के यात्रियों के साथ विवेकपूर्ण बर्ताव होना चाहिए।

श्री शीलभद्र याजी : कामरेड भूपेश गुप्त की अलग कान्फ्रेंस चल रही है, हाउस कैसे चलेगा?

श्री लोकनाथ मिश्र (उड़ीसा) : आपको क्या तकलीफ हो रही है?

श्रीमती पुष्पाबेन जनार्दनराय महेता : टी० टी० और स्टेशन के स्टाफ का बर्ताव कभी कभी इतना उद्धत होता है कि सुनकर मैं परेशान हो जाती हूं।

थर्ड क्लास की सफाई कभी नहीं होती है। बम्बई से गुजरात मेल निकलती है, उसकी कोई सफाई बीच के स्टेशन पर नहीं होती है, परिणाम यह होता है कि गन्दगी बहुत हो जाती है। कल जो विद्यावती जी ने कहा उससे मैं सहमत हूं, यह कथा सब जगह की है, उसको बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है।

इसके अलावा मेला और राष्ट्रीय उत्सवों पर कभी ध्यान नहीं दिया जाता है। वहां के यात्रियों की जो परेशानी है उसके लिए भी कुछ नहीं किया जाता। अभी एक दुर्घटना का प्रश्न पार्लियामेंट में आया कि बहुत से लोग मर गए, मगर सब जगह ट्रेन में डब्बे के ऊपर भी लोग बैठते हैं, नीचे भी बैठते हैं, किनारे भी लटकते हैं। जिस पैसे से हम रेल को चलाते हैं वह फर्स्ट क्लास पैसेंजर्स से नहीं आता, चन्द सैलून वालों से नहीं आता, थोड़े पार्लियामेंट के सदस्यों या मिनिस्टरों से नहीं आता—मिनिस्टर प्लेन में जाते हैं वह थर्ड क्लास पैसेंजर्स से आता है लेकिन उनके लिए ध्यान नहीं दिया जाता है। मैंने अभी देखा कि शराब पी कर एक टी० टी० आया। उसको ख्याल नहीं था कि किसके साथ बात कर रहा है। मैं ने उसका नाम वगैरह ले लिया तो दो-चार आदमियों ने, जो भोले-भाले देहाती थे, मुझसे कहा कि इसकी रोटी मत काटो। जिनको परेशान किया था उन्होंने मुझे मना कर दिया कि उसका नाम मत देना क्योंकि उसकी रोटी कट जायगी। तो यह उनका जो सेंटीमेंट है, उनकी जो भावना है इसकी वजह से भी कुछ लोगों की ऐसी शिकायतें नहीं आती हैं। हमारी शिकायतें बहुत हैं और मैं प्रार्थना करती हूं कि उनको सिखाना चाहिए, यूनियन्स को सिखाना चाहिये, बड़े बड़े अफसरों को सिखाना चाहिये कि आखिर हम भी भारत के नागरिक हैं और नागरिक का जो अधिकार है वह उनको जानना चाहिये।

(*Time bell rings.*)

एक मिनट में खत्म करती हूं। अब मैं एक प्रश्न रखना चाहती हूं जो बड़े बड़े स्टेशन हैं और जहां बोलने वाले होते हैं उनके सुधार और सुविधा पर ध्यान देते हैं और छोटे छोटे स्टेशनों पर कम ध्यान देते हैं, उन पर ध्यान नहीं देते हैं। आपका जो एक्सप्लेनेटरी मेमोरेंडम है उसमें पेज 247 पर आपने बताया है कि इतने काम करेंगे, 20 कामों की इसमें यादी लिखी है और उन 20 कामों में से 9 काम तो बम्बई में ही होने वाले हैं और बाकी 11 काम सारे वेस्टर्न रेलवे में होने वाले हैं। एक तरफ बम्बई और दूसरी तरफ सारी

रेलवे। तो मेरा सुझाव है कि बम्बई जैसे जो अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर्प्रान्तीय शहर हैं उनमे पैसेंजर्स की सुविधा के लिये अलग बजट करना चाहिये, हमारे छोटे से बजट में से काट कर वहां के लिये देने की जरूरत नहीं है। मैं प्रार्थना करती हूं कि रेलवे मिनिस्ट्री इसको देखे। एक हाथी जो है वह सब खर्च को खा जाता है तो एक छोटे पशु को कुछ नहीं मिलता है, तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास वगैरह जो हैं वहां सब खर्च हो जाता है और हमारे लिये कुछ बचता नहीं है। तो हमारी प्रार्थना है कि छोटे स्टेशनों का ख्याल रखे।

उपसभाध्यक्ष (श्री महावीर प्रसाद भार्गव) : हमारे लीडर को तो आप रेफर नहीं कर रहीं हैं?

श्रीमती पुष्पाबेन जनार्दनराय महेता उनका तो वह सरनेम है।

अन्त में मुझे यह कहना है कि हमारी दिक्कतें सुनें और उन पर अमल करने की भी कोशिश करे क्योंकि हम जब जब कोई प्रश्न आपके सामने रखती हैं तो जो हमारी युजर्स कंसलटेटिव कमेटी है या ज़ोनल कमेटी है या जो बहुत सी कमेटी बनी हुई हैं वहां से 'नो जस्टीफिकेशन' का जवाब ही मिलता है। आपने कभी यह जवाब भी दिया कि इसमें जस्टीफिकेशन है। कभी आपने यह भी तय किया कि इसमें जस्टीफिकेशन है या नहीं। मगर सब में "नो जस्टीफिकेशन" ही मिलता है। इसलिये हम प्रार्थना करती हैं कि हम जो छोटी मोटी दिक्कतें बताती हैं उन पर ध्यान दें। आखिर में मैं यह प्रार्थना करूंगी कि वेरावल का प्लैटफार्म बढ़ाने के लिये किसी को आप नियुक्त करें। अब यहां तो नहीं कहना चाहिये, हमारे जयसुखलाल जी और मोरारजी भाई दोनों सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं मगर वह भी हमारा कुछ नहीं करती हैं, उनको बताती हैं तो कहती हैं कि आपके रेलवे मिनिस्टर हैं उनके पास जाइये, हमारा इसमें कुछ नहीं है, हम तो यहां देखने वाले हैं। मैं जानती हूं कि करीब 3 लाख आदमी हर साल आते हैं...

श्री शीलभद्र याजी (बिहार) : वह हो जायगा, यह कहत हैं।

श्रीमती पुष्पाबेन जनार्दनराय महेता : ठीक है। वह होना चाहिये। धन्यवाद।

ANNOUNCEMENT *RE* GOVERNMENT BUSINESS

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI JAISUKHLAL HATHI): Sir, with your permission I rise to announce that Government Business in this House for the week commencing on Monday, the 11th March, 1968, will consist of—

(1) Further discussion on the Railway Budget for 1968-69.

(2) Discussion on the Resolution to be moved by the Minister of Home Affairs seeking approval of the Proclamation in relation to the State of West Bengal.

(3) Consideration and passing of the West Bengal State Legislature (Delegation of Powers) Bill, 1968.

(4) Discussion on the Resolution to be moved by the Minister of Home Affairs seeking approval of the Proclamation in relation to the State of Uttar Pradesh.

(5) Consideration and passing of the Uttar Pradesh State Legislature (Delegation of Powers) Bill, 1968.

(6) General Discussion on the General Budget for 1968-69.